8 सितंबर, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद 16वाँ रविवार

विश्वासियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है

निर्गमन 4.10-17
भजन संहिता 124
इफिसियों 6.10-18
मरकुस 9.14-29

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से आपको अनुग्रह और शांति मिले। पिन्तेकुस्त के बाद इस 16वें रविवार के दिन, हम एक ऐसे विषय का पता लगाने के लिए एकत्रित हुए हैं, जो हमारे मसीही जीवन का आधार है: अर्थात् विश्वास। बाइबल बार-बार विश्वास की सामर्थ्य और महत्व पर जोर देती है, और हमें याद दिलाती है कि जो लोग विश्वास करते हैं उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। आज, हम पवित्रशास्त्र के दृष्टि के द्वारा इस सत्य को गहराई से, निर्गमन 4:10-17, भजन संहिता 124, इफिसियों 6:10-18 और मरकुस 9:14-29 पर ध्यान केंद्रित करते हुए समझेंगे। हम विश्वास संबंधी धर्मविज्ञान पर विचार करेंगे और यह हमें बाधाओं को दूर करने, चुनौतियों का सामना करने और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने के लिए कैसे सशक्त बनाता है, चाहे फिर वे कितने भी असंभव क्यों न लगें।

1. विश्वासियों के लिए संघर्ष (निर्गमन 4:10-17)

निर्गमन 4:10-17 में, हम मूसा से मिलते हैं, एक ऐसा ऐसे व्यक्ति से, जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से बाहर निकालने के लिए चुना था। इस ईश्वरीय बुलाहट के बावजूद, मूसा संदेह और असुरक्षा से जूझता है। वह परमेश्वर से विरोध करते हुए कहता है कि, "हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ" (निर्गमन 4:10)। मूसा की हिचकिचाहट एक आम संघर्ष को दर्शाती है, जिसका सामना हम में से कई लोग करते हैं - अर्थात् अपनी क्षमताओं पर संदेह और हमारे द्वारा काम करने की परमेश्वर की सामर्थ्य में विश्वास करने की कमी का सामना करना। मूसा को परमेश्वर द्वारा दिया गया उत्तर आश्वस्त करने वाला और सशक्त करने वाला दोनों ही है। वह मूसा को याद दिलाता है कि वही सभी चीजों का सिरजहार है, जिसमें मानवीय क्षमता भी शामिल है: "मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूँगा, या बहिरा, या देखनेवाला, या अंधा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊँगा" (निर्गमन 4:11-12)। परमेश्वर का उत्तर विश्वास के एक महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करता है: अर्थात् यह हमारी क्षमताओं के बारे में नहीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ्य पर भरोसा करने के बारे में है। जब परमेश्वर हमें किसी कार्य के लिए बुलाता है, तो वह हमें इसके लिए तैयार भी करता है। विश्वास करने के लिए, हमें अपनी असुरक्षाओं से आगे बढ़ने और यह भरोसा करने की आवश्यकता होती है कि परमेश्वर उसे प्रदान करेगा जिसकी हमें आवश्यकता है। मूसा की अंतिम आज्ञाकारिता, उसकी आरंभिक अनिच्छा के बावजूद, यह दिखाती है कि विश्वास करना संदेह की अनुपस्थिति नहीं, वरन् इसके बावजूद कार्य करने की इच्छा है। यह परिच्छेद हमें सिखाता है कि जब हम अपनी सामर्थ्य के बजाय परमेश्वर की सामर्थ्य पर भरोसा करते हैं, तो कुछ भी असंभव नहीं रहता।

2. परमेश्वर की सुरक्षा का आश्वासन (भजन संहिता 124)

भजन संहिता 124 परमेश्वर की सुरक्षा और उद्धार के लिए धन्यवाद का गीत है। भजनकार घोषणा करता है कि, "यदि हमारी ओर यहोवा न होता, यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की, तो वे हम को उसी समय जीवित निगल जाते" (भजन संहिता 124:1-3)। यह भजन उस आत्मविश्वास को दर्शाता है, जो इस बात को जानने से आता है कि परमेश्वर हमारा रक्षक है, यह एक ऐसा आत्मविश्वास है, जो विश्वास में निहित है। भजनकार के शब्द हमें याद दिलाते हैं कि विश्वास केवल परमेश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे जीवन में उसकी सक्रिय भागीदारी पर भरोसा करने के बारे में है। विश्वास हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर हमारी ओर है, हमारी लड़ाई लड़ रहा है, और हमें नुकसान होने से बचा रहा है। परमेश्वर की सुरक्षा में यह भरोसा महत्वपूर्ण है, खासकर जब हम ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, जो भारी या असंभव सी लगती हैं। भजन संहिता 124 में दिया गया चित्रण निराशाजनक परिस्थितियों के दृश्य को प्रस्तुत करता है - जीवित निगल लिया जाना, जल में डूब जाना, और जाल में फँस जाना। फिर भी, प्रत्येक दृश्य में, परमेश्वर हस्तक्षेप करता है और अपने लोगों को बचाता है। यह भजन हमें परमेश्वर की सुरक्षा में विश्वास रखने के लिए यह जानते हुए प्रोत्साहित करता है कि वह हमेशा हमारे साथ है, यहाँ तक कि सबसे खतरनाक परिस्थितियों में भी। जब हम उसकी सुरक्षा से भरी देखभाल में भरोसा करते हैं, तो हम किसी भी चुनौती का आत्मविश्वास के साथ सामना यह विश्वास करते हुए कर सकते हैं कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

3. आत्मिक युद्ध में विश्वास की सामर्थ्य (इफिसियों 6:10-18)

इफिसियों 6:10-18 में, प्रेरित पौलुस विश्वासियों को "प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनने" के लिए प्रोत्साहित करता है (इफिसियों 6:10)। वह परमेश्वर के हथियार का वर्णन करता है, जो आत्मिक युद्ध में शामिल होने पर हमारे लिए उपलब्ध आत्मिक संसाधनों का एक रूपक है। इस हथियार का केंद्र है "विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो, जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको" (इफिसियों 6:16)। पौलुस द्वारा विश्वास को ढाल के रूप में चित्रित करने से इसकी सुरक्षा देने वाली सामर्थ्य को जोर मिलता है। विश्वास निष्क्रिय नहीं है; यह शत्रु के आक्रमणों के विरुद्ध एक सक्रिय बचाव है। जब हम विश्वास की ढाल को उठाते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से कह रहे होते हैं, "मैं शत्रु के झूठ से ज़्यादा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करता हूँ। मैं अपने मार्ग में आने वाले खतरे से ज्यादा परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करता हूँ।" इस तरह का विश्वास हमें आत्मिक चुनौतियों का सामना करने में लचीला बनाता है।

इस अनुच्छेद में प्रस्तुत विश्वास संबंधी धर्मविज्ञान गहरा है। यह हमें सिखाता है कि विश्वास सिर्फ़ एक भरोसा मात्र नहीं है, वरन् एक उद्देश्य है, यह जीने का एक तरीका है, जो लगातार परमेश्वर की सामर्थ्य और प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करता है। यह विश्वास हमें दृढ़ बने रहने में सक्षम बनाता है, चाहे फिर हम किसी भी आत्मिक लड़ाई का सामना क्यों न करें। जब हम परमेश्वर के हथियार में लैस होते हैं, तो विश्वास से सशक्त होते हैं, उस समय हम आत्मविश्वास के साथ घोषणा कर सकते हैं कि जो लोग विश्वास करते हैं, उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

4. विश्वास की आश्चर्यजनक सामर्थ्य (मरकुस 9:14-29)

मरकुस **9:14-29** की कहानी विश्वास की आश्चर्यजनक सामर्थ्य का एक ज्वलंत प्रदर्शन है। शिष्यों द्वारा दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने में असफल रहने के बाद एक पिता अपने दुष्टात्मा से ग्रस्त पुत्र को यीशु के पास लाता है। पिता, हताश और अपनी परेशानी में, यीशु से विनती करते हुए कहता है कि, "परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर" (मरकुस **9:22**)। यहाँ पर यीशु के द्वारा दिया गया उत्तर महत्वपूर्ण है: "यदि तू कर सकता है**?** यह क्या बात है! विश्वास करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है" (मरकुस **9:23**)। पिता का तत्काल उत्तर यह था, "मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपाय कर!" (मरकुस **9:24**), हममें से कई लोगों के मन को बतला देता है। यह विश्वास और संदेह के बीच मिलने वाले तनाव को दर्शाता है, जिसका हम अक्सर अनुभव करते हैं। लेकिन यीशु का दिया गया उत्तर दिखाता है कि अपूर्ण विश्वास - संदेह के साथ मिला हुआ विश्वास - भी आश्चर्यजनक बदलाव लाने के लिए पर्याप्त रूप से सामर्थी है। यीशु ने अशुद्ध आत्मा को लड़के को छोड़ने का आदेश दिया, और वह चंगा हो गया। यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि विश्वास की सामर्थ्य उसकी सिद्धता में नहीं, बल्कि उसकी उपस्थिति में निहित है। जैसा कि यीशु ने कहीं और सिखाया है, एक राई के दाने के बराबर विश्वास भी पहाड़ों को हिला सकता है (मत्ती **17:20**)। पिता की पुकार, “मैं विश्वास करता हूँ**;** मेरे अविश्वास का उपाय कर,” एक ऐसी प्रार्थना है, जिसे हममें से बहुतों को करने की आवश्यकता है। यह स्वीकार करता है कि हमारा विश्वास सिद्ध नहीं हो सकता है, लेकिन यीशु के हाथों में सौंपे जाने के लिए यह पर्याप्त है। जब हम संदेह के बीच भी विश्वास का अभ्यास करते हैं, तो हम अपने जीवन में काम करने के लिए परमेश्वर की आश्चर्यजनक सामर्थ्य के लिए द्वार खोल देते हैं।

यहाँ बाइबल में से कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जो दिखाते हैं कि कैसे विश्वास ने असंभव को संभव बनाया:

1. **अब्राहम और सारा के द्वारा एक बच्चे को पाने के लिए विश्वास करना (उत्पत्ति** 17:15-21; 21:1-7)

अब्राहम और सारा बच्चे पैदा करने की आयु से बहुत आगे निकल चुके थे, जब परमेश्वर ने उन्हें एक पुत्र देने का वायदा किया था। सारा **90** वर्ष की थी, और अब्राहम **100** वर्ष का था। अपनी बढ़ती हुई आयु और सारा के बांझपन के बावजूद, उन्होंने परमेश्वर के वायदे को प्राप्त किया। उनके विश्वास ने जो असंभव लग रहा था - अर्थात् बुढ़ापे में एक बच्चे का होना - उसे हकीकत बना दिया। इसहाक का जन्म हुआ, और उसके द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम को कई जातियों का पिता बनाने का अपना वायदा पूरा किया।

2. **लाल सागर को पार करना (निर्गमन** 14:21-31)

जब इस्राएली मिस्र से भाग रहे थे, तो उन्होंने खुद को फिरौन की आगे बढ़ती हुई सेना और लाल समुद्र के बीच फँसा हुआ पाया। यह एक असंभव स्थिति की तरह लग रहा था, लेकिन मूसा ने विश्वास का प्रयोग किया, और उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य पर भरोसा किया। परमेश्वर ने मूसा को समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाने का आदेश दिया, और पानी दो भागों में बंट गया, जिससे इस्राएली सूखी भूमि पर चल सके। फिर समुद्र ने पीछा कर रहे मिस्रियों को ढक दिया, जिससे इस्राएलियों का बच निकलना सुरक्षित हो गया। विश्वास ने एक असंभव स्थिति को आश्चर्यजनक उद्धार में बदल दिया।

3. **यरीहो की दीवारें (यहोशू** 6:1-20)

जब इस्राएली वायदा किए गए देश में प्रवेश कर रहे थे, तो उनका सामना यरीहो के किले से घरे हुए शहर से हुआ। शहर की दीवारें अभेद्य सी लग रही थीं, और मानवीय दृष्टिकोण से, इसे जीतना असंभव था। हालाँकि, यहोशू और

इस्राएलियों ने सात दिनों तक शहर के चारों ओर घूमने के लिए परमेश्वर के असामान्य निर्देशों का पालन किया, अर्थात् सातवें दिन तुरही बजाना और जयजयकार करना। परमेश्वर की योजना में उनके विश्वास ने दीवारों को गिरा दिया, जिससे शहर पर कब्ज़ा हो गया।

4. **गोलियत पर दाऊद की जीत (**1 **शमूएल** 17:32-50)
युवा चरवाहे दाऊद ने गोलियत का सामना किया, जो कि एक विशालकाय योद्धा था, जिसने इस्राएली सेना को भयभीत कर दिया था। गोलियत पर जीत असफल लग रही थी, और कोई भी उससे लड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। हालाँकि, परमेश्वर में दाऊद के विश्वास ने उसे गोलियत का सामना करने का साहस दिया। उसने घोषणा की, "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा" (**1** शमूएल **17:37**)। मात्र एक गोफन और एक पत्थर से, दाऊद ने गोलियत को हराते हुए, यह साबित कर दिया कि परमेश्वर में विश्वास सबसे बड़ी बाधाओं को भी पार कर सकता है।

5. **एलिय्याह और सारपत की विधवा (**1 **राजा** 17:8-16)
एक भयंकर अकाल के दौरान, परमेश्वर ने एलिय्याह को सारपत की एक विधवा के पास भेजा। विधवा अपने बचे हुए आटे और तेल का उपयोग करके अपने और अपने बेटे के लिए आखिरी बार भोजन बनाने की तैयारी कर रही थी, इससे पहले कि वे भूख से मर जाएँ। एलिय्याह ने उसे पहले उसके लिए एक छोटा सी रोटी बनाने को कहा, और वायदा किया कि जब तक अकाल खत्म नहीं हो जाता, तब तक उसकी आपूर्ति खत्म नहीं होगी। साफ दी दिखाई देने वाली असंभावना के बावजूद, विधवा ने विश्वास में आज्ञा का पालन किया, और उसका आटा और तेल आश्चर्यजनक रूप से अकाल के दौरान भी बचा रहा, जिससे उसे, उसके बेटे और एलिय्याह को भोजन मिल सके।

6. **यीशु ने सूबेदार के नौकर को चंगा किया (मत्ती** 8:5-13)
एक रोमी सूबेदार यीशु के पास अपने लकवे के रोग से पीड़ित सेवक के लिए चंगाई माँगने के लिए आया। सूबेदार ने यह कहकर अपना विश्वास व्यक्त किया कि यीशु को केवल वचन बोलने भर की जरूरत है, और उसका सेवक चंगा हो जाएगा। यीशु ने सूबेदार के विश्वास पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया” (मत्ती **8:10**)। फिर यीशु ने वचन बोला, और वह सेवक उसी क्षण चंगा हो गया। सूबेदार के विश्वास ने असंभव को संभव बना दिया।

7. **लाजर का जी उठना (यूहन्ना** 11:1-44)
जब यीशु बैतनिय्याह पहुंचा तो यीशु के घनिष्ठ मित्र लाजर को मरे हुए चार दिन हो चुके थे। उसकी बहनें, मार्था और मरियम, शोक में डूबी हुई थीं और उन्हें लगा कि आश्चर्यकर्म के लिए बहुत ज्यादा देर हो चुकी है। हालाँकि, यीशु ने मार्था से कहा, "क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी**?**" (यूहन्ना **11:40**)। मृतकों में से किसी को जीवित करना असंभव होने के बावजूद, यीशु ने लाजर को कब्र से बाहर बुलाया, और लाजर जीवित हो गया। यह आश्चर्यकर्म यीशु में विश्वास की सामर्थ्य का एक गहरा प्रदर्शन था।

8. **पतरस पानी पर चलता है (मत्ती** 14:22-33)

जब यीशु नाव में अपने चेलों की ओर पानी पर चला, तो पतरस ने पानी पर उसके पास आने के लिए कहा। यीशु ने उसे आमंत्रित किया, और पतरस, विश्वास में होते हुए, नाव से बाहर निकल गया और यीशु की ओर पानी पर चला गया। जब तक पतरस ने यीशु पर अपनी नज़रें गड़ाए रखीं, तब तक उसने असंभव को संभव कर दिखाया। हालाँकि, जब वह हवा और लहरों से विचलित हो गया, तो वह डूबने लगा। यीशु ने तुरंत हाथ बढ़ाकर उसे बचाया और कहा, "हे अल्पविश्वासी, तूने क्यों संदेह किया?" (मत्ती **14:31**)। यह कहानी दर्शाती है कि विश्वास हमें असंभव को पूरा करने की अनुमति देता है, लेकिन संदेह हमारे लिए लड़खड़ाने का कारण बन सकता है।

इन उदाहरणों को आपके उपदेश में शामिल किया जा सकता है, जिससे कि विश्वास की सामर्थ्य को दिखाया जा सके और यह कि कैसे इसने बार-बार असंभव परिस्थितियों को परमेश्वर की महानता की गवाही में बदल दिया है। वे शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करते हैं कि जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो कोई भी बाधा बहुत बड़ी नहीं होती है, और कोई भी स्थिति उसके उद्धार की क्षमता से परे नहीं होती है।

निष्कर्ष

जब हम "विश्वासियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है" विषय पर मनन करते हैं, तो हम देखते हैं कि विश्वास केवल एक भरोसा करना मात्र नहीं है, वरन् यह एक शाक्तिशाली सामर्थ्य है, जो हमारे जीवन को बदल सकती है। मूसा, भजनकार, पौलुस और मरकुस के सुसमाचार में पिता के उदाहरणों के द्वारा, हम सीखते हैं कि विश्वास हमें संदेह पर काबू पाने, परमेश्वर की सुरक्षा पर भरोसा करने, आत्मिक युद्ध में दृढ़ता से बने रहने और आश्चर्यकर्म का अनुभव करने में सक्षम बनाता है। विश्वास असंभव को खोल देने की कुंजी है। यह हमें हमारी सीमाओं से परे ले जाता है और हमें परमेश्वर की असीम सामर्थ्य से जोड़ता है। जबकि हमारा विश्वास हमेशा सिद्ध नहीं हो सकता है, तथापि यह पर्याप्त है, जब हम इसे परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं। इसलिए, आइए हम ऐसा विश्वास विकसित करें जो परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करता हो, उसकी सामर्थ्य पर निर्भर रहता हो, और असंभव की आशा करता हो। ऐसा करने से, हम परमेश्वर की सामर्थ्य को उन तरीकों से काम करते हुए देखेंगे, जो हमारी कल्पना से परे हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हम विश्वास के वरदान के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम आभारी हैं कि विश्वास के द्वारा, हम अपने जीवन में आपकी सामर्थ्य और उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं। हमें आप पर पूरी तरह से भरोसा करने में मदद करें, तब भी जब हम संदेह और चुनौतियों का सामना करते हैं। हमारे विश्वास को मजबूत करें, ताकि हम परीक्षाओं का सामना करने में दृढ़ता से बने रहें और असंभव पर विश्वास करें। हमारा जीवन इस सत्य का प्रमाण हो कि जो लोग विश्वास करते हैं, उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यीशु के नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।